उपसंहार

उपसंहार

हिमाचल प्रदेश भारत के उत्तर में स्थित है और इसकी सीमाएं उत्तर में चीन व तिब्बत को स्पर्श करती हैं तथा अन्य सीमाएं जम्मू–कश्मीर, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश से लगती हैं।' प्रशासनिक सुविधा के लिए हिमाचल प्रदेश को बारह जिलों में बांटा गया है। हिमाचल के लोग मुख्यतः गाँव में रहते हैं। यहां एक धर्म के लोग न होकर विभिन्न सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। विभिन्न धर्मों में आस्था होते हुए भी यहां के लोगों में किसी भी प्रकार का विरोधाभास नहीं है और लोग शान्तिप्रिय व प्रेमपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं। हिमाचल प्रदेश में जहां चित्रकला, वास्तुकला व अन्य कलाओं का विकास व विस्तार हुआ वहीं गीत, नृत्य एवं वादन की त्रिकोणी–संगीत कला का विकास भी सराहनीय है।[1]

"सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा"

समस्त विश्व में सबसे प्यारा हिन्दुस्तान हमारा यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि यही भारतवर्ष बहुत से रंगों को भारतीय जनजीवन में भरकर भारतीय संस्कृति की उजागर किये हुए है। विशाल हिमालय पर्वत जिसे भारतवर्ष का रक्षक कहा जाता है, इसके आंचल में बसा हिमाचल प्रदेश बहुरंगी संस्कृति का दर्पण है। हिमाचल प्रदेश की पावन भूमि को 'देवभूमि के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। यहां विभिन्न आयामों जैसेः– खानपान, रहनसहन, वेशभूषा, साहित्य, धर्म, भाषा आदि में एक दूसरे से विविधता मिलती है।

हिमाचल प्रदेश के उन्मुक्त वातावरण के अनुरूप यहां का लोक संगीत चंचल, गम्भीर और सरल है और करूण, हास्य, श्रृंगार, वीर रस से परिपूर्ण होकर सांगीतिक उद्देश्य की सार्थकता प्रदान करने वाला है। विभिन्न जनपदों की विभिन्न सांगीतिक विशेषताओं को परिलक्षित लोकगीत जनमानस के मनोभावों को सहज अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। प्रदेश के प्रत्येक क्षेत्र की भौगौलिक

---

1 हिमाचली गीतों में राग छाया (एक अध्ययन) , पी0 एच0 डी0 थीसिस, कल्पना शर्मा पृ0 सं0 220.

विशेषताएं हैं, जिसका प्रभाव लोकगीतों की विभिन्न गायन शैलियां हैं जोकि प्रत्येक क्षेत्र में एक दूसरे से कुछ विभिन्नता रखती हैं। हिमाचली जन–जीवन हिमाचली लोकगीतो से इतना जुड़ा है कि लोकगीतों का अपार भण्डार जीवन के प्रत्येक कार्यकलापों, सुखदु:ख और भावनाओं का सजीव चित्रण हमें इन्हीं लोकगीतों से मिलता है।

लोकगीत ही नहीं बल्कि हिमाचली लोकनृत्य भी लोकप्रिय हैं। यहां की 'नाटी' समस्त भारत वर्ष में हिमाचल प्रदेश का प्रतीक मानी जाती है। मण्डी की लुड्डी, का गिद्दा, कांगड़ा का झमाखड़ा, बिलासपुर का गिद्दा, चम्बा का धुरई, सिरमौर का ठोडा तथा सोलन का गिद्दा, अत्यधिक लोकप्रिय है।

लोकगीत, लोकनृत्य के अतिरिक्त यहां का वाद्य संगीत भी विशेष स्थान रखता है। हिमाचल प्रदेश के प्रमुख लोकवाद्यों में रणसिंगा, शहनाई, करनाल, ढ़ोल, नगारा, खंजरी, बांसुरी, ढ़ोल, ढ़ोलक, डमरू प्रमुख हैं। बांसुरी का महत्व अधिक है क्योंकि यह लोकगीतों में मधुरता का संचार करती है।

प्रत्येक समाज के लोकसंगीत में लोकगायकों, नर्तकों व वादकों का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है और भिन्न–भिन्न स्थानों तथा समाज में पाएं जाने वाले लोक कलाकारों की अपनी–अपनी विशेषताएं हैं। हिमाचल प्रदेश एक ऐसा राज्य हैं जिसके 12 जिलों का अपना लोकसंगीत है तथा अपने विशिष्ट लोक वादय ओर लोकनृत्य हैं ओर ऐसे पारम्पारिक कलाकार है जिनके पास लोकसंगीत के अथाह भण्डार है जिन पर कोई विशेष शोधकार्य नहीं हुआ है। अनुसंधान कर्ता ने इसी तथ्य को सामने रखते हुए उन पारम्परिक लोककलाकारों का लोक संगीत क्षेत्र में योगदान पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है जिनके पास लोकसंगीत गीत, नृत्यों वादयों की अमूल्य कला को संजोकर रखने का श्रेय प्राप्त है।

इस अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि एवं साक्षात्कार यंत्र का प्रयोग किया गया है। 12 जिलों के लोक कलाकारों की सूची तैयार कर (कुछ चुने हुए लोक कलाकारों की) उनका उभरते कलाकारों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयत्न किया है।

अनुसंधान कर्ता कुछ जिलों में जाकर उन कलाकारों से मिली और कुछ से फोन पर तथा कुछ कलाकारों से पत्राचार व्यवहार द्वारा उनका लोकसंगीत क्षेत्र में योगदान सम्बन्धित जानकारी एकत्रित कर शब्द रचना की।

* हिमाचल प्रदेश अपनी अमूल्य धरोहर अर्थात् सांस्कृतिक धरोहर के कारण भारत के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र है। इन सभी विधाओं से अवगत् कराने के लिए उसका संग्रह एवं प्रकाशन जरूरी है ताकि अन्य भारतवासी भी इससे परिचित हो सकें। हिमाचली लोक संगीत बहुत समृद्ध है और पीढ़ी आगे बढ़ता रहता है। यह इसी तरह परम्परा को कायम रखने के लिए मौखिक रूप में हस्तांतरित होता रहता है।

लोक कलाकार लोक संगीत की इस अमूल्य धरोहर को अपनी नई पीढ़ी को सौंप कर आने वाली पीढ़ी को सांगीतिक विरासत से अवगत् कराने की अकांक्षा रखता है।

* कुछ लोकगीतों का अध्ययन करने से यह ज्ञात हुआ कि हिमाचली लोकगीतों में अधिकतर पहाड़ी, काफी, तिलकामोद, भपाली, दुर्गा, पीलू तिलंग, देस, सारंग, भीमपलासी, मालकौंस, झिंझोटी आदि रागों की छाया दृष्टिगोचर होती है। इन गीतों में पूर्ण राग तो नहीं आता लेकिन रागों के छोटे–छोटे अंश देखे जा सकते हैं। हिमाचली लोकगीत लय और धुन प्रधान हैं ओर ज्यादातर अनिबद्ध शैली के हैं। गले को एक ही स्वर पर काफी समय तक टिकाना पड़ता है। इन गीतों को गाते समय गायक अनेक प्रकार के खटके, मुरकियां, मींड़ आदि का प्रयोग अनायास कर जाते हैं जिन्हे शास्त्रीय संगीतज्ञ अत्याधिक प्रयत्न करने पर ही गले से उत्पन्न कर पाते हैं।

पारम्परिक लोकगीत 12 जिलों में प्रचलित हैं, जैसेः– अनिबद्ध शैली के गीतों में मण्ड़ी का लोकगीत 'घीयां पाहोणी'

और सोलन का 'बामणा रा छोरू' लोकगीत लिया गया है। हिमाचल के शिमला, सिरमौर, कुल्लू एवं कुछ ऊपरी क्षेत्रों व मण्डी जिले का ऊपरी हिस्सा यहां का के

क्षेत्रों के लोकगीत एक दूसरे से मेल खाते हैं। प्रमुखतयः इन जिलों में नाटी, गीत अधिक लोकप्रिय हैं और यहां नाटियां सभी जिलों में प्रसिद्ध हैं। जैसे कुल्लू की 'भावा रूपिये' ओर शिमला जिले की 'नीलिमा नीलिमा' और 'ऐरे बोलो खूनिया परसरामा' बहुत लोकप्रिय है। जिला सोलन में पहाड़ी नाटी के साथ–साथ गिद्धा गीत, गंगी, लोका भी गाया जाता है। बिलासपुर में भी भ्यागड़ा, लोका, गिद्धा, छींज इत्यादि बहुत ही लोकप्रिय हैं और हमीरपुर, मण्डी, कांगड़ा में भी लगभग गीतों की शैली एक सी है। क्षेत्रिय आधार पर भाषा में थोड़ा अन्तर अवश्य पाया जाता है। यह लोकगीत इतने मधुर है कि कोई भी गायक कलाकार इनके बिना नहीं रह सकता।

'काली घघरी ले आयां हो, बिलासपुर, मण्ड़ी, कांगड़ा में भी बहुत आनन्द से गाया जाता है। कांगडा का 'भला साधु जोगिया' चम्बा का 'कुंजु चंचलों' 'सुकरात कुड़ियों चिड़ियों' बहुत ही मधुर लोकगीत है। ऊना जिला का लोकसंगीत मिश्रित है यहां पंजाब और पहाड़ की विशेषताओं का मिश्रण है। यहां पंजाबी लोकगीतों की झलक होने के कारण अधिक प्रसिद्धि प्राप्त नहीं हैं।

लाहौल–स्पिति व किन्नौर जिलों को छोड़कर अन्य सभी जिलों के लोकगीत सरल हैं। यही कारण है कि दोनों जिलों में भाषीय अन्तर होने के कारण समझने मुश्किल हैं। केवल वहीं के लोकगायक ही इन गीतों को सरलता व सुविधापूर्वक गा सकते हैं। किन्नौर व लाहौल–स्पिति के लोकगीतों की एक विशेषता यह भी है कि इनमें तीन या चार स्वर ही प्रयुक्त होते हैं। यहां के लोकगायकों की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है क्योंकि इन गीतों के अधिकतर राग पहाड़ी व भूपाली में होते हैं और जिस प्रकार की स्वर संगतियां इन लोकगीतों में प्रयुक्त होती हैं वह निश्चित रूप से ही जटिल व आश्चर्यजनक है। यहां के लोकवादक भी विचित्र ताल और लय में अनूठा प्रदर्शन करते हैं।[1]

---

1 हिमाचली लोकगीतों में राग छाया (एक अध्ययन) पृ0 सं0 226, 227, पी0 एच0 डी0 थीसिस, कल्पना शर्मा

लोकगायकों, लोकनर्तकों, लोकनाट्यकारों, लोकवाद्य कलाकारों जिनके पास यह लोकसंस्कृतिक धरोहर अभी तक सुरक्षित है। ऐसे बहुप्रतिभाशाली पारम्परिक लोक कलाकारों की मैं सदैव ऋणी रहूंगी जिन्होने हम नौजवानों को अपनी लोकसंस्कृति से अवगत् करवाया।

निष्कर्ष :

पारम्परिक लोककलाकारों द्वारा लोकगीतों, वाद्यों, नृत्यों, नाट्यों को सुरक्षित एवं जीवित रखने की चेष्टा में ही प्रस्तुत शोध ग्रंथ एक सूक्ष्म प्रयास है। लोकगीतों को बचाने तथा जीवित रखने के लिए अथक प्रयास की आवश्यकता है। ऐसे लोकगीत जो पारम्परिक लोकगायकों के पास सुरक्षित हैं और उन्ही के साथ ही समाप्त हो जाते हैं तथा भविष्य में सुनने के लिए उपलब्ध नहीं होगें और ऐसे वाद्य हैं जो कुछ तो लुप्त हो गए हैं और आधुनीकीकरण के कारण लुप्त होते जा रहे हैं। लोकनृत्य भी अपनी वास्तविकता खो रहे हैं। यदि इन्हें संजोकर नहीं रखा गया तो इनका लुप्त होना स्वाभाविक है। इसके लिए लोकगीतों की धुनों को लिपिबद्व कर संग्रहित किया जाए। लोकवाद्यों, लोकनृत्यों की वास्तविकता को बरकरार रखा जाए तथा उसके वास्तविक स्वरूप को नष्ट न किया जाए उभरते लोकगायक, वादक, नर्तक भी इसका ध्यान रखें तभी हम अपनी लोकसंस्कृति को जीवित रख सकते हैं।

शोघ ग्रन्थ का कार्य क्षेत्र 12 जिले हैं। जिसमें शोधार्थी ने प्रमुख पारम्परिक लोक कलाकारों को लिया है और उनका लोक संगीत क्षेत्र में विशेष योगदान हमारे लिए अविस्मरणीय है। जिसके लिए मैं सदैव उनकी आभारी रहूंगी जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर मेरे कार्य को पूर्ण करने में मेरी सहायता की।

लोक संगीत के गीतों में अश्लील शब्दों का प्रयोग, लोकवाद्यों में आधुनिकता का पर्दापण हमारी लोक संस्कृति को खत्म कर रहा है। इसे बचाये रखने के लिए हम सभी को प्रयास करना चाहिए तथा उसमें नवीनता लाने का कुछ हद तक प्रयास सही है पर यदि उनमें नये वाद्यों को थोपा जायेगा तो हमारा लोक संगीत लुप्त हो जाएगा। पूर्वजों से मिली इस विरासत के मूल्य को पहचानना ही इस शोध ग्रन्थ का मूलाधार है।

यह शोध ग्रन्थ एक सूक्ष्म प्रयास है तथा इस क्षेत्र के इच्छुक विद्यार्थी व शोधार्थी के लिए यह किसी सीमा तक मार्गदर्शन करने में भी सक्षम हो सकता है। हिमाचल की गौरवपूर्ण संस्कृति को संजोए रखने में सहायक सिद्ध हो सकता है ताकि आने वाली पीढ़ियां अपने पूर्वजों द्वारा संग्रहित लोकसंगीत से लाभन्वित हो सके।

--*